IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मरूस्थलीय सामाजिक संरचना

Dr. Hardayal Bhati

Lecture of Sociology

G D Memorial College Jodhpur

drhardayalbhati@gmail.com

प्रस्तुत शोध पष्चिमी राजस्थान के थार मरूक्षेत्र में स्थित तीन ग्रामीण समुदायों की सामाजिक संरचना का अध्ययन करने का प्रयास है। पष्चिमी राजस्थान में मरूस्थलीय सामाजिक संरचना का अध्ययन करने हेतु तीन पूर्ण मरूस्थलीय जिलों, यथा :– जोधपुर, जैसलमेर एवम् बाड़मेर से एक–एक ग्रामीण समुदाय का चयन कृषि व्यवसाय में कार्यरत इनकी कृषक जनसंख्या के आधार पर किया गया। ये ग्रामीण समुदाय क्रमषः लवारन, केलावा एवम् पिण्डारण हैं, सन् 1991 की जनगणना के अनुसार इन ग्रामीण समुदायों की क्रमष 91.95ः, 84.31ः एवम् 97.30ः कार्यषील जनसंख्या कृषि एवम् पषुपालन व्यवसाय में संलग्न थी। इन मरूस्थलीय ग्रामीण समुदायों की सामाजिक संरचना निम्न इकाईयों पर आधारित है :–

- जाति
- गोत्र
- परिवार
- धर्म एवम्
- षिक्षा

जाति एवम् जातीय संस्तरण

इन मरूस्थलीय ग्रामीण समुदायों में इस समय सोलह जातियाँ, मुसलमान एवम् भील जनजाति निवास करती है, इनका जातीय संस्तरण इस प्रकार है[1] :–

[1] अनुसंधानकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण।

- राजपूत
- राजपुरोहित
- पुरोहित
- स्वामी
- सन्त
- महाजन
- चारण
- माली
- नाई
- दर्जी
- लखारा
- सुथार
- रबारी
- ढोली
- मेघवाल
- जोगी

- भील
- मुसलमान

उपर्युक्त संस्तरण का आधार कर्मकाण्डीय, सांस्कारिक एवम् सामाजिक है। सर्वेक्षण में साक्षात्कार के दौरान विविध साक्षात्कारों के अनुसार इन ग्रामीण समुदायों में यही जातीय संस्तरण उपस्थित है। सन् 2000 में इन जातीय श्रेणियों में परिवारों की स्थिति इस प्रकार है।

लवारन में राजपूत जाति के 53.55:, राजपुरोहित के 0.64: महाजन के 0.32:, माली के 0.64:, नाई के 1. 29:, दर्जी के 0.64:, लखारा के 1.29:, सुथार के 0.64:, ढोली के 1.29:, मेघवाल के 36.18:, जोगी के 0.64: एवम् भील जनजाति के 2.90: परिवार हैं।

केलावा में राजपूत जाति के 30.45:, चारण के 3.0075:, नाई के 1.50:, सुथार के 5.26:, मेघवाल के 6. 39:, भील जनजाति के 4.14: एवम् मुसलमानों के 49.25: परिवार हैं।

पिण्डारण में राजपूत जाति के 39.44ः, पुरोहित के 2.11ः, स्वामी के 1.41ः, सन्त के 4.92ः, नाई के 4.23ः, दर्जी के 8.45ः, सुथार के 4.23ः, रबारी के 8.11ः, मेघवाल के 2.11ः, भील जनजाति के 23.94ः एवम् मुसलमानों के 7.042ः परिवार हैं।[2]

तीनों ग्रामीण समुदायों के उपर्युक्त जातीय संस्तरण एवम् इनकी परिवार संख्या के विष्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक ग्रामीण समुदाय में राजपूत जाति सामान्य रूप से प्रभावी जाति के रूप में उपस्थित है एवम् इनके समकक्ष एक अन्य सामाजिक श्रेणी भी है। लवारन में राजपूत जाति के समकक्ष मेघवाल, केलावा में राजपूत जाति की परिवार संख्या इनके समकक्ष उपस्थित मुसलमानों की परिवार संख्या से कम दृष्टिगत होती है। पिण्डारण में राजपूत जाति के समकक्ष भील जनजाति उपस्थित है। शेष जातियों की परिवार संख्या एवम् उनकी भूमिकाएं इतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी कि इन दोनों सामाजिक श्रेणियों की।

इन ग्रामीण समुदायों की प्रमुख सामाजिक श्रेणियों को इस प्रकार भी समझ सकते है :–

लवारन

राजपूत	53.55
मेघवाल	36.16
अन्य नौ जातियाँ एवम् भील जनजाति	10.29
	———————
	100ः

केलावा

मुसलमान	49.25
राजपूत	30.45
अन्य चार जातियां एवं भील जनजाति	20.30
	————————
	100ः

पिण्डारण

राजपूत	39.44
भील	23.94

[2] अनुसंधानकर्त्ता द्वारा सन् 2000 में किया गया सर्वेक्षण।

अन्य आठ जातियाँ एवम् मुसलमान	36.62
	————————
	100.00

गोत्र

गोत्र जाति का उप समूह है एवम् अनिवार्य रूप से बहिर्विवाही है। अध्ययन क्षेत्र के लवारन ग्रामीण समुदाय की राजपूत व मेघवाल जाति बहुगोत्रीय है तथा भील जनजाति भी द्विगोत्रीय है। केलावा में सभी जातियाँ एक गोत्रीय है तथा पिण्डारण की एकमात्र राजपूत जाति बहुगोत्रीय है एवम् शेष सभी एकगोत्रीय जातियाँ है।

लवारन में सात राजपूत गोत्रें, छः मेघवाल गोत्रें एवम् दो भील जनजाति के गोत्रें है, सात राजपूतीय गोत्रों में से सर्वाधिक परिवार राठौड गोत्र के 87.36:, भाटी के 6.02:, सोढा के 2.42:, चौहान के 1.20:, इन्दा के 1.20:, चावड़ा के 1.20: एवम् तँवर के 0.60: परिवार है। छः मेघवाल गोत्रों में से सर्वाधिक परिवार गुजरिया गोत्र के 64.29:, गंडेर के 20.54:, पँवार के 6.25:, जयपाल के 4.46:, परिहार के 3.57: एवम् धांधु गोत्र के 0.89: है। द्विगोत्रीय भील जनजाति का एक परिवार लीड़िया गोत्र का एवम् शेष सभी आठ परिवार डगला गोत्र के हैं।

केलावा की सभी जातियाँ एक गोत्रीय है एवम् यहाँ की प्रभुत्वषाली राजपूत जाति एकमात्र भाटी गोत्र की है। पिण्डारण के दस राजपूत गोत्रों में से सर्वाधिक परिवार (राजपूत जाति के कुल परिवारों के अनुपात में) परिहार गोत्र के 28.57:, धांधल के 25:, तँवर के 14.29:, भाटी के 7.14:, गौड़ के 7.14:, चौहान के 5.36:, पँवार के 7.14:, ड़ेमा के 3.57: एवम् राठौड़ गोत्र के परिवार 1.79: है।[3]

इस प्रकार उपर्युक्त गोत्र विष्लेषण से स्पष्ट है कि बहुगोत्रीय जातियाँ लवारन में एक से अधिक हैं, केलावा में बहुगोत्रीय जाति का अभाव है एवम् पिण्डारण में मात्र एक जाति बहुगोत्रीय है और शेष सभी जातियाँ एक गोत्रीय हैं। लवारन की राजपूत जाति में राठौड़ गोत्र प्रभावषाली है, मेघवाल जाति में गुजरिया गोत्र एवम् भील जनजाति में डगला गोत्र प्रभावषाली है तथा शेष गोत्रों के परिवार इनके समकक्ष लवारन में गौण है। पिण्डारण की राजपूत जाति में परिहार गोत्र प्रभावषाली है एवम् इसके समकक्ष धांधल गोत्र है, शेष राजपूत गोत्रों के परिवार इन दोनों के समकक्ष पिण्डारण में गौण हैं। इन गोत्रों को इस प्रकार भी समझा जा सकता है :—

[3] अनुसंधानकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण।

लवारन

राजपूत

राठौड़	87.36
अन्य छः गोत्रें	12.64
	————
	100:

मेघवाल

गुजरिया	64.29
अन्य पाँच गोत्रे	35.71
	————
	100:

भील

ड़गला	88.89
लीड़िया	11.11
	—————
	100:

केलावा

राजपूत

भाटी	100:
	—————
	100:

पिण्डारण

राजपूत

परिहार गोत्र	28.58
अन्य आठ गोत्रें	71.42
	———
	100:

इस प्रकार लवारन में राजपूत जाति के अन्तर्गत राठौड़ गोत्र, मेघवाल में गुजरिया गोत्र एवम् भील जनजाति का ड़गला गोत्र प्रभावषाली है। केलावा की सभी जातियाँ एक गोत्रीय है एवम् वहां प्रभुत्व रखने वाली राजपूत जाति एक गोत्रीय भाटी गोत्र की है तथा पिण्डारण में परिहार राजपूत गोत्र का बाहुल्य है।

परिवार

मरूस्थलीय कृषक संरचना के अध्ययन क्षेत्र में परिवार आकार के आधार पर तीन प्रकारों में विभाजित है, यथा :— एकल, संयुक्त एवम् विस्तृत।

लवारन की कुल परिवार संख्या के एकल परिवार 70.65:, संयुक्त परिवार 27.42: एवम् विस्तृत परिवार 1.93: है। जातीय दृष्टि से लवारन में भील जनजाति, नाई, राजपुरोहित, सुथार एवम् महाजन जाति के समस्त परिवारों का आकार एकल है, वहीं राजपूत जाति के 67.47:, मेघवाल जाति के 72.32:, लखारा जाति के 75:, ढोली के 75:, माली के 50:, जोगी जाति के 50: परिवारों का आकार एकल है एवम् दर्जी जाति के एक भी परिवार का आकार एकल नहीं है। दर्जी जाति के समस्त परिवारों का आकार संयुक्त है तथा राजपूत जाति के 28.92:, मेघवाल के 27.68:, लखारा के 25:, ढोली के 25:, माली के 50:, एवम् जोगी जाति के 50: परिवारों का आकार संयुक्त हैं। विस्तृत परिवार में एकमात्र राजपूत जाति के 3.61: परिवार हैं।

केलावा की कुल परिवार संख्या के एकल परिवार 57.14:, संयुक्त परिवार 40.60: एवम् विस्तृत परिवार 2.26: है। जातीय दृष्टि से केलावा में नाई जाति के समस्त परिवारों का आकार एकल है तथा मुसलमानों के 63.36:, राजपूतों के 51.85:, मेघवालों के 58.82:, भील जनजाति के 45.45:, चारण के 50: एवम् सुथार जाति के 28.57: परिवारों का आकार एकल है। परिवार के संयुक्त आकार के अन्तर्गत मुसलमानों के 36.64:, राजपूतों के 43.21:, मेघवाल के 41.18:, भील के 54.55:, चारण के 50:, एवम् सुथार जाति के 57.14: परिवारों का आकार संयुक्त है और विस्तृत आकार के परिवारों में मात्र दो जातियों, यथा राजपूत जाति के 4.94: एवम् सुथार जाति के 14.29: परिवारों का आकार विस्तृत है।

पिण्डारण की कुल परिवार संख्या के एकल परिवार 55:, संयुक्त परिवार 43: एवम् विस्तृत परिवार 2 है। जातीय दृष्टि से राजपूत के 44.64:, भील जनजाति के 76.47:, दर्जी के 58.33:, मुसलमानों के 40:, सन्त के 57. 14:, नाई के 66.67:, सुथार के 33.33:, मेघवाल के 66.67:, रबारी के 66.67:, पुरोहित के 33.33: एवम् स्वामी जाति के 50: परिवारों का आकार एकल है।

परिवार के संयुक्त आकार के अन्तर्गत राजपूत के 48.21:, भील जनजाति के 23.53:, दर्जी के 41.67:, मुसलमानों के 60:, सन्त कें 71.43:, नाई के 33.33:, सुथार के 66.67:, मेघवाल के 33.33:, रबारी के 33.33:, पुरोहित के 66.67: एवम् स्वामी जाति के 50: परिवारों का आकार संयुक्त है तथा परिवार के विस्तृत आकार में एकमात्र राजपूत जाति के 7.14: परिवार है।[4]

इस प्रकार उपर्युक्त विष्लेषण से पता चलता है कि सर्वाधिक मात्रा (70.65:) में एकल परिवार लवारन में, संयुक्त परिवार (33:) पिण्डारण में एवम् विस्तृत परिवार (2.26:) केलावा में है।

धर्म

धार्मिक दृष्टि से तीनों ग्रामीण समुदायों में हिन्दू, मुसलमान एवम् भील जनजाति उपस्थित है। लवारन में हिन्दू धर्म एवम् भील जनजाति उपस्थित है। भील जनजाति के परिवार हिन्दुओं के समकक्ष मात्र 2.90: है

[4] अनुसंधानकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण।

एवम् शेष 97.10: परिवार हिन्दू धर्म के हैं। केलावा में हिन्दू, मुसलमान धर्म एवम् भील जनजाति पाई जाती है। इनमें से हिन्दू परिवार केलावा की कुल परिवार संख्या के 46.62:, मुसलमान परिवार 49.25: एवम् भील परिवार 4.13: है। पिण्डारण में भी हिन्दू, मुसलमान धर्म एवम् भील जनजाति पाई गई। जिसमें से हिन्दू परिवार पिण्डारण की कुल परिवार संख्या के 69.18:, मुसलमान परिवार 7.42: एवम् भील जनजाति परिवार 23.94: है।[5]

इस प्रकार धार्मिक दृष्टि से लवारन में हिन्दू परिवारों का वर्चस्व है एवम् भील जनजातीय परिवार इनके समकक्ष अस्तित्वहीन है तथा मुसलमानों का यहां अभाव है। वहीं केलावा में मुसलमान सर्वाधिक है एवम् हिन्दू परिवार इनसे अपेक्षाकृत कम है और भील जनजाति के परिवार लवारन की अपेक्षा यहां अधिक है। पिण्डारण में सर्वाधिक मात्रा में हिन्दू परिवार ही है, मगर भील जनजाति के परिवार भी यहां पर्याप्त मात्रा में है तथा मुसलमान परिवार यहां केलावा की तुलना में अल्प मात्रा मे ंदृष्टिगत होते हैं।

षिक्षा

तीनों मरूस्थलीय ग्रामीण समुदायों के औसतन 18: व्यक्ति षिक्षित है एवम् शेष 82: अषिक्षित है। लवारन के 16.44: व्यक्ति षिक्षित एवम् शेष 88.56: अषिक्षित है। इन षिक्षित व्यक्तियों का 29.063: भाग स्त्रियाँ है एवम् शेष 70.94: पुरूष है। इन षिक्षित व्यक्तियों का 50.63: भाग कक्षा एक से पाँच के मध्य उत्तीर्ण है, 42.81: कक्षा पाँच से आठ तक उत्तीर्ण है, 4.69: कक्षा 9 से बारह तक एवम् 1.87: ग्रेजुएट तथा पोस्ट ग्रेजुएट है।

इन शैक्षणिक स्तरों में पुरूषों का 91.18: एवम् स्त्रियों का 98.93: भाग प्रथम दो शैक्षणिक स्तरों तक षिक्षित है और शेष 8.82: पुरूष तथा 1.075: स्त्रियाँ अन्तिम दो शैक्षणिक स्तरों में षिक्षित है। जो उपर्युक्त दोनों स्तरों के समकक्ष गौण है, उपर्युक्त स्त्रियां तो तृतीय स्तर तक ही षिक्षित है एवम् अन्तिम स्तर में उनका कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। इस प्रकार स्पष्ट है कि लवारन के षिक्षित व्यक्तियों में पुरूष श्रेणी का अधिकतर दबाव कक्षा आठ तक ही है, इससे आगे अत्यन्त अल्प मात्रा में बढ़ पाया है और स्त्री श्रेणी में कक्षा एक से पाँच के बीच तक अधिक दबाव है। अतः स्पष्ट है कि लवारन में पुरूष कक्षा आठ तक पढ़ने का प्रयास करते हैं एवम् स्त्रियां कक्षा पाँच भी कठिनाई से उत्तीर्ण कर पाती है।

केलावा के 20.81: व्यक्ति षिक्षित एवम् शेष 79.19: अषिक्षित है। इन षिक्षित व्यक्तियों का 14.050: भाग स्त्रियां एवम् शेष 85.95: पुरूष है। षिक्षित व्यक्तियों का 76.31: भाग कक्षा एक से पाँच के मध्य, 14.60: कक्षा पाँच से आठ तक, 7.71: कक्षा 9 से बारह तक उत्तीर्ण है एवम् शेष 1.38: व्यक्ति स्नातक तक षिक्षित है। इन शैक्षणिक स्तरों मे ंपुरूषों का 89.43: भाग प्रथम दो शैक्षणिक स्तरों तक ही षिक्षित है एवम् सम्पूर्ण स्त्रियाँ (100:) प्रथम शैक्षणिक स्तर तक ही षिक्षित एवम् शेष शैक्षणिक स्तरों में इनके प्रतिनिधित्व का अभाव है। पुरूषों का शेष 10.57: भाग अन्तिम दो शैक्षणिक स्तरों में ंषिक्षित है, जो प्रथम दो स्तरों के षिक्षित पुरूषों के समकक्ष गौण है। इस प्रकार स्पष्ट है कि षिक्षित व्यक्तियों में पुरूष एवम् स्त्री दोनों श्रेणियों का अधिकंष दबाव कक्षा एक से

[5] अनुसंधानकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण।

पाँच के मध्य तक ही हैं, इससे आगे पुरूषों में शैक्षणिक स्तर अल्प मात्रा मे बढ़ पाया है एवम् स्त्रियों मे एक भी कक्षा पाँच तक उत्तीण नही हैं।

पिण्डारण के 18.40ः व्यक्ति षिक्षित एवम् शेष 81.60ः व्यक्ति अषिक्षित है। इन षिक्षित व्यक्तियों का 20ः स्त्रियाँ है एवम् शेष 80ः पुरूष है। षिक्षित व्यक्तियों का 55.56ः भाग कक्षा एक से पाँच के मध्य, 38.33ः कक्षा पाँच से आठ तक एवम् 6.11ः व्यक्ति कक्षा नौ से बारह तक उत्तीण है एवम् अन्तिम स्तर में कोई व्यक्ति षिक्षित नहीं हैं। इन शैक्षणिक स्तरों में पुरूषों का 92.36ः भाग प्रथम दो शैक्षणिक स्तरों तक ही षिक्षित है एवम् सम्पूर्ण स्त्रियां (100ः) प्रथम शैक्षणिक स्तर तक ही सिमित है एवम् शेष शैक्षणिक स्तरों में इन स्त्रियों के प्रतिनिधित्व का अभाव है। षिक्षित पुरूषों का शेष 7.64ः भाग अन्तिम दो शैक्षणिक स्तरों में षिक्षित है, जो प्रथम दो शैक्षणिक स्तरों के षिक्षित पुरूषों के समकक्ष गौण है। इस प्रकार स्पष्ट है कि पिण्डारण में ग्रामीणों का कक्षा पाँच तक ही षिक्षा पर अधिक दबाव है। स्त्रियाँ कक्षा पाँच भी उत्तीण नहीं कर पाती है एवम् पुरूषों में कक्षा बारह भी बहुत कम पुरूष उत्तीण कर पाते हैं।

तीनों मरूस्थलीय ग्रामीण समुदायों में उपर्युक्त षिक्षित एवम् अषिक्षित व्यक्तियों के विष्लेषण से स्पष्ट है कि सर्वाधिक षिक्षित व्यक्ति क्रमषः केलावा (20.81ः), पिण्डारण (18.40ः) एवम् लवारन में (16.44ः) है।

मरूस्थलीय अध्ययन क्षेत्र की इन चौदह इकाईयों के तुलनात्मक विष्लेषण से जो सामाजिक संरचना उभरती है उसकी तुलना राजस्थान, भारत एवम् विष्व के अन्य भागों में अन्य भागों में अनेकों समाज वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सामाजिक संरचना से करना उचित प्रतीत होता है।

सन्दर्भ ग्रन्ध सूची

अमित कुमार गुप्ता	**एग्रेरियन स्ट्रक्चर एण्ड पिजेन्ट रिवॉल्ट इन इण्डिया**, क्राईटेरियॉन पब्लिकेषन, नई दिल्ली, 1986.
अमरसिंह फरोदा एवम् महेन्द्रप्रताप सिंह	**मरूक्षेत्र अनुसंधान के आयाम**, प्रकाशक केन्द्रीय रूक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर, 1998.
अमल कुमार सैन	**लैण्ड यूज क्लासिफिकेषन सिस्टम इन इण्डियन ऐरिड जोन**, काजरी, जोधपुर, 1988.
आन्द्रे बैते	**सिक्स एसेज इन कम्पेयरटिव सॉषियॉलॉजी**, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1984.
आलमसिंह	**डेजर्ट रिर्सोसेज एण्ड टेक्नालॉजी**, साईन्टिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर, 1962.

ए.आर. देसाई	**रुरूल सॉषियॉलॉजी इन इण्डिया**, पॉपूलर पब्लिकेशन, 1969.
ए.के. सिंघवी एण्ड अनलकार	**थार डेजर्ट**, जियॉलॉजिकल सोसायटी ऑफ बैंगलौर, बैंगलौर, 1991.
ए.के. तिवारी	**डेजर्टीफिकेषन, मॉनिटॉर्निग एण्ड कंट्रोल**, साईन्टिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर, 1988.
एच.एस. सक्सेना	**रूरल राजस्थान**, क्लासिक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1998.
एम. जौहरी	**सचित्र ज्ञान विज्ञान कोष**, विज्ञान भारती, नई दिल्ली, 1989.
एम.एन. श्रीनिवास	**इण्डिया सॉषल स्ट्रक्चर**, हिन्दुस्तान पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली, 1982.
एन.जी. रंगा	**द मार्डन इण्डियन पिजेन्ट**, अमृत बुक कार्पोरेशन, दिल्ली, 1949.

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation